



डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर।
फोटो साभार सोशल मीडिया

विशेष: वर्तमान अमेरिकी सामाजिक राजनीति में अंबेडकर की प्रासंगिकता



मंदार ए पाटटेकर

● न्यू इंडिया अब्रॉड नेटवर्क

न्यूयॉर्क के क्वींस में 61वीं स्ट्रीट और ब्रॉडवे चौराहे को आधिकारिक तौर पर डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर-वे के रूप में नामित किए जाने की घोषणा ने मुझे खुशी और गर्व से भर दिया। औपनिवेशिक भारत में हाशिए पर पड़े समुदाय में पैदा होने और अपने पूरे जीवन में भेदभाव और सामाजिक बहिष्कार का सामना करने के बावजूद डॉ. अंबेडकर उत्पीड़ित लोगों के अधिकारों के मसीहा बन गए। विशेष रूप से अनुसूचित जाति से संबंधित लोगों के लिए, जो भारत के सबसे सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित लोग हैं। जाति-आधारित भेदभाव के खिलाफ उनके अथक संघर्ष और भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करने में उनकी भूमिका ने भारत में सामाजिक न्याय के वास्तुकार के रूप में उनकी विरासत को मजबूत किया है।

बाबासाहेब बॉम्बे विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र और राजनीति में बीए करने के बाद, जुलाई 1913 में कोलंबिया विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने के लिए न्यूयॉर्क आए थे। बाबासाहेब के शिक्षक कृष्णजी अर्जुन केलुस्कर के प्रयासों से बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने उन्हें तीन साल के लिए 11.50 ब्रिटिश पाउंड प्रति माह की छात्रवृत्ति दी थी। उन्होंने अमेरिका में तीन साल बिताए। देश में उनके नाम पर एक सड़क का नाम होना, वाकई एक उचित श्रद्धांजलि है। समान अधिकारों और अवसरों को प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले प्रत्येक अमेरिकी कार्यकर्ता को सामाजिक न्याय प्राप्त करने के लिए डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के संतुलित, सूक्ष्म और देशभक्ति पूर्ण दृष्टिकोण का अध्ययन करना चाहिए। यह लेख वर्तमान अमेरिका में सामाजिक न्याय प्राप्त करने के लिए अंबेडकर की पद्धति की प्रयोज्यता का पता लगाने का मेरा प्रयास है।

सशक्तिकरण की नींव के रूप में शिक्षा

अंबेडकर ने सामाजिक असमानताओं को खत्म करने में शिक्षा के महत्व को पहचाना। अंबेडकर का दृष्टिकोण सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि या जाति के बावजूद गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक समान पहुंच प्रदान करने की आवश्यकता पर जोर देता है। अमेरिका में शिक्षा की खाई को पाटने, वंचित क्षेत्रों में शैक्षिक बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और यह सुनिश्चित करने के प्रयास किए जाने चाहिए कि सभी छात्रों को ऐसी शिक्षा प्राप्त हो जो उन्हें सफल होने के लिए आवश्यक कौशल प्रदान करे। कानून के अलावा, अगर संपन्न अमेरिकियों द्वारा वंचित स्कूलों में जमीनी स्तर पर स्वयंसेवा के प्रयास किए जाएं तो इसके जबरदस्त परिणाम होंगे।

सकारात्मक कार्रवाई और आरक्षण नीतियां

अंबेडकर ने हाशिए पर पड़े समुदायों के साथ ऐतिहासिक

कानूनी सुधार और अधिकारों का संरक्षण:

अंबेडकर ने भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो समानता, ब्याय और व्यक्तिगत अधिकारों के संरक्षण के सिद्धांतों को प्रतिष्ठापित करता है। इसी तरह, संयुक्त राज्य अमेरिका सभी नागरिकों, विशेष रूप से हाशिए पर पड़े समुदायों के अधिकारों की रक्षा करने वाले कानूनी ढांचे को मजबूत करने के लिए अंबेडकर के दृष्टिकोण से सीख सकता है। अमेरिका आपराधिक ब्याय प्रणाली के भीतर भेदभावपूर्ण प्रथाओं को संबोधित करके एक अधिक ब्यायपूर्ण समाज की दिशा में प्रयास कर सकता है, जैसे नकद जमानत प्रणाली और अनिवार्य न्यूनतम सजा। वे कानूनी प्रतिनिधित्व तक समान पहुंच सुनिश्चित कर सकते हैं और स्टॉप और सर्च जैसी अत्यन्त नीतियों का पुनर्भूतिकांकन कर सकते हैं।

अन्याय को दूर करने के लिए सुधारात्मक और सकारात्मक कार्रवाई की नीतियों और आरक्षण की जोरदार वकालत की। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश के लिए जाति-आधारित प्राथमिकताओं को समाप्त कर दिया है, लेकिन एथलीट, संकाय से संबंधित लोगों, छात्रों और प्रमुख दाताओं के लिए वरीयताओं को बरकरार रखा है। यह वंचितों के निरंतर कठिन संघर्ष को उजागर करता है। अंतर्निहित और स्पष्ट पूर्वाग्रहों के कारण बाधाएं काफी आम हैं। वंचितों को गरीबी और हाशिए से आजादी दिलाने के लिए अमेरिका में कार्यक्रमों को तैयार और कार्यान्वित किया जाना चाहिए।

जमीनी स्तर के आंदोलनों को सशक्त बनाना

सामाजिक न्याय के लिए अंबेडकर का संघर्ष जमीनी आंदोलनों को लेकर उनके विश्वास से प्रेरित था। वर्तमान अमेरिकी संदर्भ में, ब्लैक लाइव्स मैटर, एलजीबीटीक्यू + अधिकारों की वकालत और महिला अधिकार अभियान जैसे सामाजिक आंदोलन डॉ. अंबेडकर की समावेशी दृष्टि के समान ही भेदभाव के विभिन्न रूपों के परस्पर संबंध पर जोर देते हैं। विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग सहित समाज के सभी वर्गों के लोगों के इन आंदोलनों में भागीदारी महत्वपूर्ण है। यह डॉ. अंबेडकर को अपने मिशन को संगठित करने और बनाए

रखने के लिए तथाकथित उच्च जातियों की मदद स्वीकार करने की समानता देता है। धीरे-धीरे पूर्वनिर्धारित धारणाओं की बाधाओं को खत्म करके, हाशिए के समूहों की आवाजों को सशक्त बनाकर, नागरिक भागीदारी को प्रोत्साहित करके और एकजुटता बढ़ाकर अमेरिका एक अधिक समावेशी समाज की ओर प्रगति कर सकता है।

भेदभाव को खत्म करना

भेदभाव चाहे जाति, वंश, धर्म या लिंग के आधार पर हो या किसी दूसरे रूप में, यह पूरे राष्ट्र को नुकसान पहुंचाता है। इसमें किसी न किसी स्तर पर उत्पीड़ित और यहां तक कि उत्पीड़क भी शामिल होते हैं। अंबेडकर के तरीके को लागू करने में गहरे पूर्वाग्रहों को उजागर करना और समाज में भेदभाव को बढ़ावा देने वाले पूर्वाग्रहों को हवा देना शामिल है। व्यक्तिगत पारिवारिक स्तर पर जागरूकता, शिक्षा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सचेत रूप से बढ़ावा देकर, अमेरिका भेदभावपूर्ण प्रथाओं को खत्म करने और विभिन्न समुदायों के बीच सद्भाव को बढ़ावा देने की दिशा में काम कर सकता है। हाशिए पर पड़े समुदाय के परिवारों को उत्सव के दौरान अपने घर पर आमंत्रित करना, सोशल मीडिया पर सामाजिक सद्भाव पर जोर देने की तुलना में ज्यादा बेहतर साबित होगा।

शिक्षा, सकारात्मक कार्रवाई, कानूनी सुधार, जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण और भेदभाव के उन्मूलन के माध्यम से सामाजिक न्याय प्राप्त करने के लिए डॉ. अंबेडकर की विधि समकालीन संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। इन सिद्धांतों को अपनाकर, अमेरिका एक ऐसा समाज बनाने का प्रयास कर सकता है जहां अवसर सुलभ हों, हाशिए के समुदायों को सशक्त बनाया जाए और समानता और न्याय प्रबल हो। सामूहिक प्रयास, कानून और समावेशिता के प्रति प्रतिबद्धता से अमेरिका एक अधिक न्यायसंगत भविष्य की ओर कदम बढ़ा सकता है। भारत में सामाजिक न्याय के लिए अंबेडकर के अथक संघर्ष से प्रेरणा लेते हुए, हम अमेरिकी सभी के लिए समानता और न्याय के महान लक्ष्य को लगातार आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित हो सकते हैं।

(मंदार ए पाटटेकर: एमडी, सेवानिवृत्त चिकित्सक, सामुदायिक आयोजक और स्वयंसेवक हिंदू आध्यात्मिक देखभाल प्रदाता हैं। पत्नी मुग्धा के साथ, उन्होंने पिछले 15 वर्षों में इलिनॉयस के पियोरिया में एक वंचित स्कूल में स्वेच्छा से ट्यूशन देने में सहायता की पेशकश की है और भोजन और शैक्षिक ड्राइव का आयोजन किया है। हिंदू स्वयंसेवक संघ, संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ उनकी सक्रिय भागीदारी, सामाजिक सद्भाव और सार्वभौमिक भाईचारे के सिद्धांतों के लिए उनकी प्रशंसा को दर्शाती है।)

शिक्षा, सकारात्मक कार्रवाई, कानूनी सुधार, जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण और भेदभाव के उन्मूलन के माध्यम से सामाजिक न्याय प्राप्त करने के लिए डॉ. अंबेडकर की विधि समकालीन संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।